



राजस्थान जनर
राजस्थान सरकार



पंच गौरव

जिला प्रशासन, झुंगरपुर





मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच—गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच—गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।


(भजन लाल शर्मा)



संदेश



राजस्थान राज्य विविधता से परिपूर्ण हैं जिसको ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार द्वारा जिलों की विशेषता अनुसार प्रत्येक जिले में ऐतिहासिक धरोहरों एवं पर्यावरण का संरक्षण व संवर्धन के साथ जिले में आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अधिकाधिक अवसर सृजित करने की दिशा में सर्वांगीण विकास हेतु पंच गौरव कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है।

झूंगरपुर जिले के पंच गौरव के रूप में चिन्हित एक जिला—एक पर्यटन स्थल बेणेश्वर धाम, एक जिला—एक उत्पाद मार्बल, एक जिला—एक खेल हॉकी, एक जिला—एक उपज आम एवं एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति सागवान के परिचय, वर्तमान स्थिति, आवश्यकता व भविष्य की योजना से आमजन को परिचित करवाने के साथ स्थानीय समुदाय की भागीदारी से जिले के चिन्हित पंच गौरव के स्थान व उत्पादों हेतु जिले में सकारात्मक वातावरण प्रदान कर जिले को अग्रणी स्थान दिलाना हमारी प्राथमिकता है।

मुझे आशा है कि यह विवरणिका जिले के पंच गौरव की कार्ययोजना से आमजन को अवगत करवाने एवं उनकी भागीदारी सुनिश्चित कराने में सहायक सिद्ध होगी।



अंकित कुमार सिंह
(जिला कलक्टर, झूंगरपुर)

प्रेरणा स्रोत

श्री बाबुलालजी खराड़ी (प्रभारी मंत्री)

डॉ. आरुषि अजय मलिक (प्रभारी सचिव)

श्री अंकित कुमार सिंह (जिला कलक्टर, डूंगरपुर)

श्री दिनेश धाकड़ (अतिरिक्त जिला कलक्टर, डूंगरपुर)

संकलन एवं संपादन

श्री अमित शर्मा (उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, डूंगरपुर)

श्रीमती छाया चौबीसा (सहायक निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, डूंगरपुर)

श्री इन्द्रवीर सिंह सारंगदेवोत (सहायक सांख्यिकी अधिकारी, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, डूंगरपुर)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय सूची	पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	1–2
2.	झूंगरपुर एक नज़र में	3–5
3.	पर्यटन विभाग <ul style="list-style-type: none"> ● एक जिला—एक पर्यटन रथल बेणेश्वर धाम का परिचय ● बेणेश्वर धाम को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना 	6–8
4.	वन एवं पर्यावरण विभाग <ul style="list-style-type: none"> ● एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति सागवान का परिचय एवं वर्तमान स्थिति ● सागवान की विशेषता एवं उपयोगिता ● सागवान को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना 	9–12
5.	कृषि एवं उद्यानिकी विभाग <ul style="list-style-type: none"> ● एक जिला—एक उपज आम का परिचय ● आम की वर्तमान स्थिति ● जिले में आम की उत्पादन को बढ़ाने हेतु कार्ययोजना 	13–15
6.	खेल एवं युवा मामलात विभाग <ul style="list-style-type: none"> ● एक जिला—एक खेल हॉकी का परिचय ● हॉकी की वर्तमान स्थिति ● हॉकी को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना 	16–19
7.	उद्योग विभाग <ul style="list-style-type: none"> ● एक जिला—एक उत्पाद मार्बल का परिचय ● मार्बल की वर्तमान स्थिति ● मार्बल को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना 	20–22
8.	पंच गौरव कार्यक्रम हेतु गठित समिति के संपर्क सूत्र	23

प्रावक्षण

राज्य की भौगोलिक विशेषताएं सम्पूर्ण भू-भाग पर विभिन्न प्रकार की हैं इसलिए राज्य के प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष की भिन्नता के आधार पर उसको बढ़ावा देने की संभावनाओं को पहचान कर उन्हें राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर पहचान बनाने के उद्देश्य से पंच-गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है। इससे प्रत्येक जिले की विरासत का संरक्षण, संवर्धन एवं सर्वांगीण विकास करने में मदद मिलेगी तथा इन गतिविधियों के माध्यम से जिले में आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसर सृजित होंगे। झूंगरपुर के पंच-गौरव एक जिला—एक उत्पाद मार्बल, एक जिला—एक उपज आम, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति सागवान, एक जिला—एक खेल हॉकी एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल बेणेश्वर धाम चिह्नित किये गए हैं।

पंच-गौरव से स्थानीय विशेषताओं को प्रोत्साहन, उत्पादों की गुणवत्ता एवं विपणन क्षमताओं में सुधार करने के साथ ही स्थानीय लोगों/ समुदायों को शामिल किया जाएगा ताकि वे अपने जिले की विशेषताओं को पहचान सकें एवं सक्रिय भूमिका निभा सकें। साथ ही स्थानीय युवाओं/लोगों को सम्बंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण एवं जानकारी प्रदान की जाएगी जिससे उनकी क्षमता का विकास हो सके। कार्यक्रम के तहत विशेषज्ञों व अधिकारियों की समितियां गठित की जायेगी जिससे समय समय पर उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता का मूल्यांकन कर उनमें आवश्यक सुधार करने में सहायता मिलेगी एवं स्थानीय समुदायों को भी मूल्यांकन प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा जिससे उनकी राय एवं अनुभवों के आधार में सक्रिय भागीदारी को बढ़ाया जाएगा।

पंच-गौरव को विकसित करने एवं प्रभावी संचालन के लिए जिला स्तर पर समन्वय समिति का गठन किया गया है। जिला स्तरीय समिति में जिला कलक्टर अध्यक्ष, उद्योग, कृषि एवं उद्यानिकी, वन्य एवं पर्यावरण, खेल एवं युवा मामलात, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार, सूचना एवं जनसम्पर्क, जिला कलक्टर द्वारा नामित राजस्थान लेखा सेवा का अधिकारी सदस्य है तथा उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी सदस्य सचिव है। यह समन्वय समिति पंच-गौरव को प्रोत्साहन देने के लिए कार्ययोजना तैयार करेगी तथा इसकी कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा हेतु प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार बैठक आयोजित की जायेगी, जिसमें आवश्यक सुधार के निर्णय लिए जा सकते हैं।

जिले में पंच-गौरव के तहत उपज एवं वनस्पति प्रजाति का संग्रहण, भण्डारण, पैकेजिंग, प्रसंस्करण, नई प्रौद्योगिकी, उन्नत कृषि तकनीकों और स्थानीय बाजारों को बढ़ावा देकर विकसित करने का कार्य किया जाएगा। उत्पाद के विकास हेतु बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ बनाकर, पारंपरिक कौशल को बढ़ावा देकर, डिजिटल मार्केटिंग के माध्यम से विश्व स्तर पर विकसित किया जाएगा। पर्यटन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना, सेवाओं एवं सुविधाओं का उन्नयन करने का कार्य मजबूती से किया जाएगा। खेल के लिए ग्राम पंचायत/ ब्लॉक स्तर/ जिला स्तर पर ट्रेनिंग सेंटर, हॉस्टल आदि का उन्नयन कर खिलाड़ियों को पोषण एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

पंच—गौरव को जिले में विकसित करने के लिए विभाग की योजनाओं, नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से वित्त पोषण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त MPLAD, MLALAD गैर सरकारी संगठनों, सीएसआर फाउण्डेशन, उद्योग संघों, भामाशाह का सहयोग लेकर पंच—गौरव को विकसित करने की कार्ययोजना पर कार्य किया जाएगा। इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए हमारे जिले को प्रति वर्ष अधिकतम राशि रूपये 5.00 करोड़ उपलब्ध कराई जाएगी, जिसका उपयोग पंच गौरव में चयनित गौरवों के लिए किया जाएगा।

पंच गौरव कार्यक्रम की प्रभावशीलता एवं सफलता सुनिश्चित करने के लिए जिले की मॉनिटरिंग सेल स्थापित की जाएगी, जिसमें सम्बंधित गतिविधियों की नियमित रिपोर्टिंग एवं फीडबैक शामिल हैं।

झूँगरपुर – एक नजार में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

संस्कृति स्थापत्य और शौर्य में विश्व इतिहास में अनूठी पहचान बनाने वाले राजस्थान प्रदेश के दक्षिण भाग में अवस्थित झूँगरपुर जिला, पुरातन समय से ही अपनी बहुरंगी आदिम संस्कृति, समृद्ध इतिहास, स्थापत्य, साहित्य, कला और नैसर्गिक सौंदर्य का बहुआयामी दिग्दर्शन कराता है। ऐतिहासिक संदर्भों के अनुसार रावल वीरसिंहदेव (1278–1303 ई.) ने कार्तिक शुक्ल एकादशी, विक्रम संवत् 1339(1282 ई.) के दिन झूँगरपुर नगर की स्थापना की। यही झूँगरपुर नगर का स्थापना दिवस माना जाता है। कालान्तर में वीरसिंह के पोते रावल झूँगरसिंह ने वास्तु शास्त्र की पुरातन विधियों के अनुसार गढ़ के निर्माण और नगर के विकास–विस्तार के काम आरंभ किए थे। इनके पुत्र रावल कर्मसिंह ने (1362–1384 ई.) यह काम पूरे करवाएं।

सात सदियों पुरानी समृद्ध संस्कृति और ऐतिहासिक–पुरातात्त्विक विरासत को परम्पराओं, मेलों, पर्वों, उत्सव–त्यौहारों के माध्यम से सहेजते हुए झूँगरपुर जिला उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर है।

परिवेशीय पृष्ठभूमि

जनजाति बाहुल्य जिला 23°20' से 24°01' उत्तरी अक्षांश तथा 73°21' से 74°23' पूर्वी देशान्तर के बीच अवस्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3770 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक दृष्टि से झूँगरपुर जिले में आठ उपखंड (झूँगरपुर, सागवाड़ा, सीमलवाड़ा, आसपुर, बिछीवाड़ा, गलियाकोट, चिखली, साबला), तेरह तहसीलें (झूँगरपुर, सागवाड़ा, सीमलवाड़ा, आसपुर, बिछीवाड़ा, गलियाकोट, चिखली, झौंथरी, साबला, पाल देवल, गामड़ी अहाड़ा, ओबरी, दोवड़ा) एक नगर परिषद (झूँगरपुर), एक नगर पालिका (सागवाड़ा), बारह पंचायत समितियां (झूँगरपुर, सागवाड़ा, सीमलवाड़ा, आसपुर, बिछीवाड़ा, गलियाकोट, चिखली, झौंथरी, साबला, दोवड़ा, पाल देवल, गामड़ी अहाड़ा) तथा 353 ग्राम पंचायतें हैं। सन 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल आबादी 13 लाख 88 हजार 552 है। इसमें 6 लाख 96 हजार 532 पुरुष एवं 6 लाख 92 हजार 20 स्त्रियां हैं। जिले का लिंगानुपात 994 प्रति वर्ग किलोमीटर व जनसंख्या घनत्व 368 है। 2011 जनगणना के अनुसार जिले की साक्षरता दर 59.5 प्रतिशत है, जिसमें महिला साक्षरता दर 46.2 प्रतिशत तथा पुरुषों की साक्षरता दर 72.9 प्रतिशत है। जिले के गलियाकोट कस्बे से कर्क रेखा गुजरती है।

जिले में माही, सोम–जाखम, भादर, मोरन, वात्रक नदियां हैं। सोम नदी उदयपुर जिले तथा माही नदी बांसवाड़ा जिले के साथ इस जिले की सीमाओं का निर्धारण करती है। सोमकमला आम्बा, अमरपुरा, लोडेश्वर, एडवर्ड संमंद एवं मारगिया इस जिले के प्रमुख बांध हैं। जिले में चार विधानसभा क्षेत्र (चौरासी, सागवाड़ा, आसपुर एवं झूँगरपुर) हैं, जो अनुसूचित जनजाति उम्मीदवार वालों के लिए आरक्षित हैं। लोकसभा की दृष्टि से जिले के तीन विधानसभा क्षेत्र (झूँगरपुर, चौरासी, सागवाड़ा) बांसवाड़ा संसदीय क्षेत्र में आते हैं जबकि आसपुर विधानसभा क्षेत्र उदयपुर लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत परिगणित है।

पंच गौरव – प्रदर्शनी की झलकियाँ



पंच गौरव



एक जिला-एक पर्यटन स्थल बेणेश्वर धाम



पर्यटन विभाग

1. परिचय

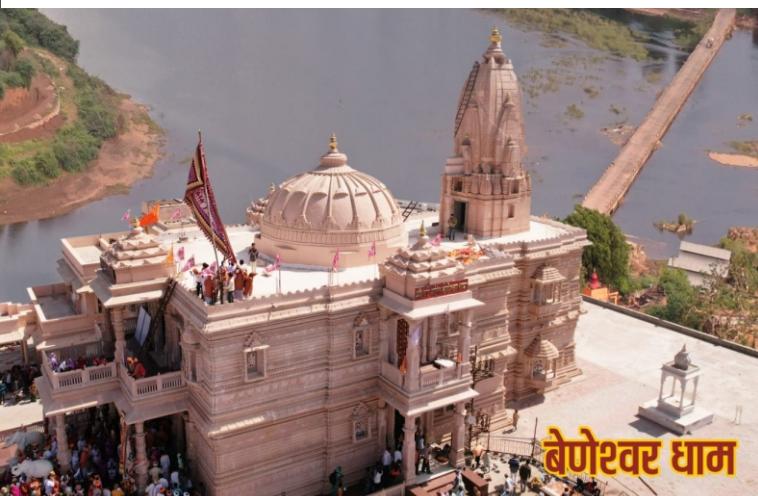
- बेणेश्वर धाम झंगरपुर जिला मुख्यालय से लगभग 60 किमी दूर राजस्थान के दक्षिणांचल में बांसवाड़ा और झूंगरपुर जिलों के मध्य माही, सोम और जाखम नदियों के त्रिवेणी संगम के पावन जल से घिरा है जिसे आबुदरा के नाम से जाना जाता है, पर स्थित है। बेणेश्वर धाम लोक आस्थाओं का वह महातीर्थ है जहाँ हर साल माघ शुक्ल एकादशी से माघ पूर्णिमा तक बेणेश्वर धाम में विशाल मेले का आयोजन होता है। मेले में देश-विदेश से पर्यटक सम्मिलित होते हैं, बेणेश्वर धाम मेला राजस्थान का सबसे बड़ा जनजाति मेला है, जो आस्था, धर्म, और संस्कृति का संगम है। यह न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि राजस्थान की लोक संस्कृति और परंपराओं को भी दर्शाता है इसी कारण इसे इस अंचल के कुंभ की ही तरह मान्यता प्राप्त है।
- बेणेश्वर टापू पर बेणेश्वर शिवालय एवं राधाकृष्ण मंदिर प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। बेणेश्वर धाम पर मावजी महाराज द्वारा रचित चौपड़ों को म्यूजियम में दर्शनार्थियों के दर्शनार्थ रखा गया है। जिनमें कई भविष्यवाणियां की गयी हैं।

2. भविष्यकीकार्ययोजना:

- पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लाईट एण्ड साउण्ड शो प्रारंभ किया जाएगा।
- पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु कलरफूल डान्सिंग फाउन्टेन की व्यवस्था की जाएगी।
- बेणेश्वर धाम मेला स्थल स्थित रंगमंच के दोनों ओर विश्राम गृह का निर्माण मय टॉयलेट, पीने के पानी की व्यवस्था की जाएगी।
- बेणेश्वर धाम घाट के किनारे सोलर लाईट लगाई जाएगी।
- बेणेश्वर धाम स्थित एनिकट की मरम्मत व गेट आदि की आवश्यकता है जिसे पूर्ण किया जाएगा, जिससे बेणेश्वर धाम जल स्तर में वृद्धि होगी व पर्यटन स्थल की सुदंरता में भी वृद्धि होगी।



पंच गोरख



एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति सागवान



वन एवं पर्यावरण विभाग

1. परिव्याप्ति एवं वर्तमान स्थिति:

- झूंगरपुर में सागवान वृक्ष जिसे स्थानीय भाषा में (हागड़ा) के नाम से भी जाना जाता है। यह पेड़ एक सदाबहार पेड़ है जो उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। इस लकड़ी का उपयोग सभी क्षेत्रों में कच्चे घर बनाने, फर्नीचर आदि में इमारती लकड़ी के लिए उपयोग किया जाता है।
- जिला झूंगरपुर में सागवान की वनस्पति निम्न वनक्षेत्र सीमलवाड़ा, झूंगरपुर, आंतरी, बिछीवाड़ा, सागवाड़ा, आसपुर में सागवान अच्छी मात्रा में पाया जाता है। इस वनमण्डल में सागवान वन क्षेत्र लगभग 23213.98 हैक्टेयर क्षेत्र है।
- राज्य के सर्वांगीण विकास को देखते हुए जिला झूंगरपुर अन्तर्गत वन विभाग द्वारा जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर “एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति में सागवान की प्रजाति” का चयन कर सागवान के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले की एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।



2. सागवान की विशेषता :

- सागवान या टीकवुड द्विबीजपत्री पौधा है। यह चिरहरित यानि वर्ष भर हरा—भरा रहने वाला पौधा है। सागवान का वृक्ष प्रायः 80 से 100 फुट लम्बा होता है। इसका वृक्ष काष्ठीय होता है। इसकी लकड़ी हल्की, मजबूत और काफी समय तक चलने वाली होती है। इसके पत्ते काफी बड़े होते हैं। फूल उभयलिंगी और सम्पूर्ण होते हैं। सागवान का वानस्पतिक नाम टेक्टोना ग्रैंडिस (Tectona Grandis) यह बहुमूल्य इमारती लकड़ी है।
- वन विभाग से संबंधित वन सुरक्षा एवं प्रबंध समितियों के सदस्यों को समय—समय पर पौध तैयारी एवं वृक्षारोपण से संबंधित समय—समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसमें आम लोगों को अधिकाधिक वृक्षारोपण करने हेतु प्रोत्साहित किया जायेगा।
- जन साधारण, आम नागरिकों, कृषकों, पर्यावरण प्रेमियों, निजी संस्थाओं, व्यवसायिक संस्थानों, औद्योगिक इकाईयों एवं राजकीय विभागों को सागवान अधिक से अधिक वृक्षारोपण हेतु प्रचार—प्रसार किया जाता है।



3. सागवान की उपयोगिता:-

- सागवान उत्कृष्ट कोटि के जहाजों, नावों, बोंगियों इत्यादि भवनों की खिड़कियों और चौखटों, रेल के डिब्बों और उत्कृष्ट कोटि के फर्नीचर के निर्माण में प्रधानतया प्रयुक्त होता है। जिला डूंगरपुर में स्थानीय आदिवासी जिला होने से यहां मुख्यतया: मकान निर्माण में अधिक काम में लिया जाता है। साथ ही घरेलू खाना बनाने में प्रयुक्त सामग्री में भी सागवान उपयोग में लिया जाता है।
- सागवान वृक्ष एक सदाबहार पेड़ है जो उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। इस लकड़ी का उपयोग जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में कच्चे घर बनाने, फर्नीचर एवं लघु उद्योग आदि के लिए उपयोग किया जाता है।

4. सागवान को प्रोत्साहित करने हेतु कार्य योजना:-

- जिला डूंगरपुर में इस वर्ष वनमण्डल अधीन 16 नर्सरियों यथा—घाटामाविता, आंतरी, लक्ष्मणसागर, डेचा, दोवडा, निठाउवा, साबला, आसपुर, कुंआ, धम्बोला, छापी, भंवरिया, पातेला, गैंजी, वेड में लगभग 80,000 सागवान पौध तैयारी की जा रही है।
- स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर वृक्षारोपण अभियान चलाया जायेगा। वर्षा ऋतु के दौरान स्थानीय समुदाय, तथा वन सुरक्षा समिति द्वारा वृक्षारोपण किया जाता है तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण हेतु प्रचार—प्रसार किया जाता है।
- चयनित कार्यस्थलों पर समुदायों एवं स्थानीय लोगों की सहायता से पौधारोपण एवं संधारण कार्य किया जाएगा।
- जिले में जहां सागवान की अधिकता है वहां पर क्लीनिंग एवं कर्षण कार्य करवाया जाकर सागवान वनस्पति में वृद्धि करने के प्रयास किये जाएँगे। प्रत्येक ठूंठ पर शुरूआत में तीन स्वस्थ, समान अन्तराल पर कोपिस तने रखे जाते हैं उसके बाद 5वें वर्ष में 2 तथा 10वें वर्ष में एक कोपिस तना रखा जाता है।
- सागवान की प्रजाति का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा दिये जाने हेतु विशेष प्रयास किये जायेंगे।



इस वन मण्डल अधीन वित्तीय वर्ष 2024–25 में निम्नानुसार सागवान के पौध तैयार किये जा रहे हैं जो वित्तीय वर्ष 2025–26 में वृक्षारोपण किया जावेगा।

क्र.सं.	रेंज	कार्यस्थल	लगाये जाने वाले सागवान पौधों की संख्या
1	Antri	Kaharo ka sira	4500
2	Antri	Malvi	4000
3	Antri	Gamera	3000
4	Aspur	Faliyohar KN 5	4000
5	Aspur	Suliya Bainka KN 10	2000
6	Aspur	Lodawal Oda	2000
7	Dungarpur	Laxmanpura-A	2000
8	Dungarpur	Laxmanpura-B	2000
9	Dungarpur	Mataji (Chela Kherwara)	2000
10	Dungarpur	Bhagagarh-A	2000
11	Dungarpur	Annapura-III	2400
12	Dungarpur	Galendra-i	2000
13	Dungarpur	bharatpur (Hanuman ji Dara)	2000
14	Dungarpur	Chela Kherwara	2000
15	Dungarpur	Vatada-A	1600
16	Dungarpur	Wated (Watada)	2000
17	Simalwara	Vaktapur B	2000
18	Simalwara	Ijjatpura	2000
19	Simalwara	Garada Machala	2000
20	Sagwara	Patlee Damriya Gird	2750
21	Sagwara	Damriya Dahla Hindoliya	3500
22	Sagwara	Ghatamavita Satanalava	2500
23	Simalwara	Rojmahuda	2000
24	Sagwara	Ghatamavita Bamaniya	2500
25	Simalwara	Bathadi	2000
26	Simalwara	Hudila wala Dara	1000
27	Simalwara	Dungargata	3000
28	Simalwara	Borkhed	2000
29	Simalwara	Piyola	2000
30	Sagwara	Ghatamavita Limdi Bhatod	2500
31	Sagwara	GhataMavita Kamli Nal	2500
32	Sagwara	Khanthal A Balrampur A	3000
33	Sagwara	Khanthal A Khandlaie	2500
34	Antri	Faloj	1000
35	Aspur	Faliyohar KN 3	2000
36	Antri	Samota	2200
		Total	84450

एक जिला-एक उपज आम



कृषि एवं उद्यानिकी विभाग

1. परिचय:-

- आम का वानस्पतिक नाम मैंजिफेरा इंडिका एल. (*Mengifera indica L.*) एवं कुल (Family) एनाकारडिएसी (Anacardiaceae) है। इसके अद्वितीय स्वाद, मनमोहक खुशबू, आकर्षक रंग, पौष्टक तत्वों की प्रचुरता तथा जनसाधारण में लोकप्रियता के कारण इसे "फलों के राजा" की संज्ञा दी गई है। इसकी खेती भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही प्रचलन में है। इसका फल विटामिन "ए" तथा "सी" का सर्वश्रेष्ठ स्रोत है। आम के पेड़ का लगभग प्रत्येक भाग किसी न किसी रूप में उपयोग लाया जाता है। जहाँ आम की टहनियाँ हवन में प्रयुक्त होती हैं, वहीं पत्तियाँ मंगल कलश पर, मंगल बन्धनवार तथा अनेकों धर्मिक कार्यों में प्रयुक्त होती हैं। लकड़ी जहाँ इमारती कार्यों में प्रयुक्त होती है वहीं फल खाने में प्रयोग किये जाते हैं। कच्चे आम चटनी, मुरब्बा, अचार, अमचूर तथा पेय पदार्थ बनाने के उपयोग में लाये जाते हैं। पके फल खाने के अतिरिक्त गूदा, रस, स्ववेश, जैम एवं आम पापड में प्रयुक्त होते हैं।
- आम के लिए उष्ण व उपोष्ण जलवायु उपयुक्त मानी गयी है। इसके लिए वे क्षेत्र सर्वाधिक उपयुक्त हैं, जहाँ जून से सितम्बर माह तक पर्याप्त वर्षा होती है तथा पुष्टन व फलन के समय मौसम साफ रहता हो। आम की वृद्धि के लिए 24–28 डिग्री तापमान सर्वाधिक उपयुक्त रहता है।
- आम की उचित बढ़वार एवं फलन के लिए जीवांशयुक्त गहरी बलुई दोमट मिट्टी जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो, उपयुक्त रहती है। ऐसी भूमि जिसमें दो मीटर गहराई तक अवरोध न हो आम उत्पादन के लिए अच्छी रहती है। भूमि का पी. एच. मान 6.5 से 7.5 होना आम उत्पादन के लिए उत्तम रहता है। चुनायुक्त कंकरीली पथरीली व ऊसर भूमि इसकी खेती के लिए अनुपयुक्त रहती है।



2. आम की जिले में वर्तमान स्थिति:-

- झूंगरपुर जिले में आम फसल का अनुमानित क्षेत्रफल कुल 200 हैक्टेयर है। जिले में देशी आम के साथ – साथ आम की उन्नत किस्में आम्रपाली, मल्लिका, दशहरी, केसर, लंगडा इत्यादि किस्में प्रचलित हैं। प्रायः कृषक आम की उन्नत किस्मों के पौधे कृषि विज्ञान केन्द्र – फलोज, जिला झूंगरपुर, राजहंस नर्सरी, गढ़ी, जिला बांसवाड़ा एवं राज्य की पंजीकृत नर्सरी एवं राज्य के बाहर राजकीय नर्सरियों से क्रय करते हैं। जिले के जोतों का आकार छोटे होने के कारण कृषक बगीचों के साथ ही खेत की मेड़ों पर भी आम की खेती कर रहे हैं। नवीन फल बगीचा स्थापना पर उद्यान विभाग द्वारा कृषकों को राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना के तहत इकाई लागत का 75 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। आम के पौधे सामान्य अन्तराल 10X10 मीटर एवं सघन अन्तराल 5X5 मीटर पर रोपित किये जाते हैं। वर्तमान में जिले की समस्त पंचायत समिति में आम की खेती कृषकों द्वारा की जा रही है।

3. जिले में आम के उत्पादन को बढ़ाने हेतु कार्ययोजना:-

- आम के क्षेत्रफल में वृद्धि करना :— इस हेतु जिले के 500 कृषकों को ग्राफटेड आम के 10 हजार पौधें वर्ष 2025—26 में नि: शुल्क वितरित किये जाना प्रस्तावित है, जिससे आम के क्षेत्रफल में 100 हैक्टर की वृद्धि होगी।
- आम पापड़, अचार मुरब्बा, केंडी निमार्ण को बढ़ाना :— ढूंगरपुर जिले के SHG समूह की महिला / BPL/ अंत्योदय लाभार्थी / चयनित PIP/ MGNREGA जॉब लाभार्थी को ३०फॉकेम्पस प्रशिक्षण बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान, ढूंगरपुर (BSVS-RSETI DUNGARPUR) के द्वारा दिया जायेगा। प्रत्येक प्रशिक्षण 35 प्रशिक्षणार्थी का होगा। कुल 3 प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।
- प्रशिक्षण / सेमीनार का आयोजन :— कृषकों को आम की खेती की उन्नत कृषि तकनीकों की जानकारी हेतु 5 प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है। प्रत्येक कृषक प्रशिक्षण न्यूनतम 50 एवं अधिकतम 100 कृषकों का होगा। साथ ही कृषि एवं उद्यान विभाग के अधिकारियों / कर्मचारियों का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम किया जाना प्रस्तावित है।
- अन्तर्राज्यीय कृषक भ्रमण :— कृषकों को आम की उन्नत कृषि जानकारी एवं नवीन किस्मों के बगीचों के अवलोकन हेतु प्रमुख आम उत्पादक राज्य जैसे गुजरात, उत्तर प्रदेश का एक कृषक भ्रमण करवाया जाना प्रस्तावित है।
- IEC गतिविधि :— कृषकों हेतु आम की उन्नत कृषि तकनिकी के प्रचार—प्रसार हेतु लिफलेट, साहित्य का मुद्रण कार्य करवाया जाना प्रस्तावित है।



आम की फसल का रोपण



आम की फसल का पुष्पन



आम की फसल का फलन

एक जिला-एक खेल हॉकी



खेल एवं युवा मामलात विभाग

1. परिचय:-

- हॉकी भारत देश का राष्ट्रीय खेल है तथा वर्ष 1932 से ओलम्पिक में लगातार प्रतिनिधित्व करता आ रहा है।
- हॉकी खेल में कुल 16 खिलाड़ी एक टीम में होते हैं तथा 11 खिलाड़ी खेलते हैं। हॉकी का मैदान 100 मीटर लम्बा 60 मीटर चौड़ा होता है।

2. हॉकी की वर्तमान स्थिति -

- हॉकी खेल वर्तमान में कनबा, विकासनगर, झौथरी, गैजी, रेटा, बेडा, करावाडा सुराता, माल, चौकी, पगारा, रीछा, सीमलवाडा, पीठ, बोडामली, खेल छात्रावास तीजवड, डूंगरपुर इत्यादि में प्रमुखतः खेली जाती है।
- हॉकी खेल में राज्य खेल परिषद् द्वारा आयोजित ग्रामीण एवं महिला खेल तथा खेलो इण्डिया इत्यादि प्रतियोगिता में इस जिले के अबतक 50–60 खिलाड़ी (बालक–बालिकाएं) राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जिले व राज्य का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं तथा 7–8 खिलाड़ी वर्तमान में भारतीय–सेना में सेवारत हैं।
- हॉकी खेल के उपकरण महंगे होने से जनजाति क्षेत्र के बालक–बालिका खिलाड़ी क्रय नहीं कर सकते हैं। अतः राज्य–सरकार द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत हॉकी को जिले में बढ़ावा देने से जिले में अच्छे प्रतिभावान खिलाड़ी उभरकर सामने आ सकेंगे।
- वर्तमान में हॉकी खेल राजस्थान जनजाति खेल छात्रावास तीजवड में नियमित रूप से खेला जाता है जहां पर 40–50 खिलाड़ी रोजाना अभ्यास कर रहे हैं।



3. हॉकी को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना:

- शिक्षा विभाग के अधीन जिले के समस्त विद्यालयों के बालक-बालिका अध्यनरत हैं उन्हें हॉकी खेल उपकरण की सुविधा उपलब्ध-कराते हुए प्रशिक्षण प्रदान कर खेल से जुड़ने हेतु वातावरण तैयार किया जायेगा।
- खिलाड़ियों के लिए एक वर्ष में दो बार जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित कर एवं ब्लॉक स्तर पर वर्ष में चार बार हॉकी प्रतियोगिता आयोजित कर श्रेष्ठ खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा एवं उन्हें पंद्रह-पंद्रह दिनों के प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से गहन प्रशिक्षण दिया जाएगा जिससे खिलाड़ियों में तकनीक का बेहतर विकास होगा व अच्छे खिलाड़ी तैयार किये जा सकेंगे।
- श्रेष्ठ बालक बालिकाओं का चयन कर राज्य में संचालित हॉकी अकादमियों में प्रवेश के प्रयास के साथ-साथ अन्य सुविधाएं (शिक्षा, चिकित्सा, खेल उपकरण, खेल किट) उपलब्ध करवाया जायेगा जिससे अच्छे खिलाड़ी निकल कर सामने आ सकते हैं।
- जिला मुख्यालय पर हॉकी खेल के विकास हेतु हेतु पर्याप्त भूमि स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में उपलब्ध है जहाँ हॉकी खेल मैदान विकसित करने हेतु प्रयास किये जाएँगे।
- हॉकी खेल के विकास हेतु हॉकी स्टीक फाईबर ग्लास, हॉकी टर्फ बॉल, हॉकी गोलकीपर किट, हॉकी गोल पोस्ट आदि उपकरण खरीदे जाएँगे।
- जिले में हॉकी खेल के बेहतर प्रशिक्षण प्रदान करने से जिले में हॉकी हेतु बेहतर वातावरण बनाने हेतु प्रयास किये जाएँगे।





एक जिला—एक उत्पाद मार्बल



उद्योग एवं वाणिज्य विभाग

1. परिचय

- दूंगरपुर जिले में रोहनवाडा, मेताली, डचकी, सुराता, बोडामली में ग्रीन मार्बल पाया जाता है। उक्त क्रम में यद्यपि स्टोन संबंधी गतिविधियां महत्वपूर्ण उद्यम/व्यवसाय है, जहां पर मार्बल उद्योग एवं मार्बल स्लेष्ट एवं मार्बल के सजावटी उत्पाद एवं मूर्तिकला के उत्पाद विशेष रूप से बनाए जाते हैं, जो पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं। यहां पर सूक्ष्म एवं लघु स्तर के मार्बल एवं मार्बल उत्पाद के उद्योग स्थापित हैं। वर्तमान में जिले में मार्बल एवं मार्बल उत्पाद की औद्योगिक एवं व्यावसायिक गतिविधियां संचालित हैं।
- सोमपुरा मूर्तिकला— मार्बल एवं मार्बल के उत्पाद अंतर्गत यहां के सोमपुरा कारीगर कच्चा माल पारेवा पत्थर जिले की खदानों से खरीद कर ब्लॉक लाते हैं। फिर आकृति अनुसार इसको काटकर परम्परागत एवं कुछ आधुनिक औजारों से आकार देते हैं। सोमपुरा शिल्पियों द्वारा परेवा पत्थर, सफेद मार्बल, की मूर्तियाँ बनाई जाती है। सर्वप्रथम मूर्ति की ड्राईंग/स्केच पत्थर तैयार की जाती है एवं उस पत्थर पर जिसकी प्रतिमा का निर्माण करना होता है उस पर स्केच लगाकर आउट कटिंग की जाती है। तत्पश्चात शिल्पी विभिन्न औजार के माध्यम से आकार देना प्रारंभ करता है तथा उसके पश्चात उसे “रेगमाल” व अन्य उपकरणों से घिसाई की जाती है। अन्त में फिनिशिंग व पोलीश की जाती है साथ ही अगर ग्राहक चाहता है तो उस प्रतिमा पर रंग भी किया जाता है। पुराने समय में शिल्पकार छैनी, हथोड़ी से इस कार्य को करते थे। वर्तमान में कटर मशीन, हेण्ड कटर मशीन, लेथ मशीन, गण मशीन, डॉयमण्ड टूल्स, गज व कम्पास भी काम में लिये जा रहे हैं।



2. मार्बल की वर्तमान स्थिति

- वर्तमान में जिले के उक्त श्रेणी के उद्यमों को GEM पोर्टल पर पंजीकृत करने की कार्यवाही भी जारी है। जिले के बड़े उद्यमों को उक्त पोर्टल पर रजिस्टर्ड कर दिया गया है व अन्य उद्यमों को भी उक्त बाबत् प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- एक जिला एक उत्पाद एवं उद्योगों के विकास एवं प्रोत्साहन के लिये राज्य स्तर पर विभिन्न श्रेणियों में उद्योग रत्न पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।
- आयुक्तालय उद्योग के निर्देशानुसार एक जिला एक उत्पाद प्रोडक्ट के विपणन को बढ़ावा देने व प्रोत्साहित करने के लिए हाल ही में जिले के उक्त प्रोडक्ट को भी दिल्ली व जयपुर में आयोजित मेले/प्रदर्शनी में भी डिस्प्ले किया गया।

3. मार्बल को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना:

- जिले में उक्त प्रोडक्ट को बढ़ावा देने हेतु विभाग द्वारा संचालित सब्सिडी आधारित ऋण योजनाओं यथा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना, डॉ. भीमराव अम्बेडकर दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना में लाभांवित करने व उद्यम स्थापना / विस्तार हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। कार्यालय में मार्गदर्शन ब्यूरो व विभिन्न स्तर पर आयोजित प्रोत्साहन शिविरों में भी उक्त को बढ़ावा देने के प्रयास किये जाते रहे हैं।
- जिले में युवा वर्ग को मार्बल एवं मार्बल उत्पाद उद्योगों के तकनीकी विकास से संबंधित उनके अभिनव विचारों को धरातल पर लाने में आवश्यक तकनीकी सहायता के लिए राजकीय आईटीआई एवं पॉलीटेक्निक कॉलेजों में इन्क्यूबेशन सेन्टर की स्थापना की जाएगी।
- जिले में निर्यातकों को निर्यात प्रक्रिया संबंधी सहायता एवं योजनाओं की जानकारी के लिए जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र में निर्यात सुविधा केन्द्र की स्थापना की जाएगी।
- राजस्थान निर्यात संवर्धन परिषद एवं अन्य समकक्ष संगठनों के माध्यम से क्रेता—विक्रेता सम्मेलन आयोजित करना तथा उत्पादों की ब्रांडिंग, पैकेजिंग एवं डिजायनिंग हेतु कार्यशालायें एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जाएँगे।
- राष्ट्रीय प्लेटफार्म जैसे ONDC, GeM, इंडिया बिजनेस पोर्टल आदि पर शामिल होने के लिए MSMEs को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान की जा रही है।



पंच गौरव कार्यक्रम हेतु गठित समिति के संपर्क सूत्र

क्र.सं.	अधिकारी	विभाग	पद	मोबाइल नंबर
1	श्री अंकित कुमार सिंह	जिला कलक्टर, डूंगरपुर	अध्यक्ष	9725136544
2	श्री रंगास्वामी ई	वन एवं पर्यावरण विभाग, डूंगरपुर	सदस्य	9482547105
3	श्री मुकेश कुमार वर्मा	संयुक्त निदेशक, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग, डूंगरपुर	सदस्य	9772205412
4	श्री विकास कुमार चेचानी	उपनिदेशक उद्यान विभाग, डूंगरपुर	सदस्य	9636566801
5	श्री भगवानदास	महा प्रबंधक उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, डूंगरपुर	सदस्य	9828343998
6	श्री जयसिंह डामोर	कोषाधिकारी, डूंगरपुर	सदस्य	9928833962
7	श्रीमती छाया चौबीसा	सहायक निदेशक, जिला सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, डूंगरपुर	सदस्य	9413779908
8	श्री जितेन्द्र कुमार माली	सहायक निदेशक, जिला पर्यटन विभाग बांसवाड़ा	सदस्य	9950982623
9	श्री नरेश डामोर	खेल एवं युवा मामलात विभाग, डूंगरपुर	सदस्य	9571844474
10	श्री अमित शर्मा	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, डूंगरपुर	सदस्य सचिव	7014918112



कलेक्ट्रेट, डूंगरपुर (राज.)

Email : dsodng.des@rajasthan.gov.in